اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۚ ﴿٤٧﴾

47. उसी (अल्लाह) की तरफ़ ही वक़्ते क़ियामत के इल्मका ह़वाला दिया जाता है, और न फल अपने ग़िलाफों से निकलते हैं और न कोई मादा ह़ामिला होती है और न वोह बच्चा जनती है मगर (येह सब कुछ) उसके इल्म में होता है। और जिस दिन वोह उन्हें निदा फ़रमाएगा कि मेरे शरीक कहां हैं (तो) वोह (मुशरिक) कहेंगे : हम आपसे अ़र्ज़ किए देते हैं कि हम में से कोई भी (किसी के आपके साथ शरीक होने पर) गवाह नहीं है।

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٤٨﴾

48. वोह सब (बुत) उनसे ग़ाइब हो जाएंगे जिनकी वोह पहले पूजा किया करते थे और वोह समझ लेंगे कि उनके लिए भागने की कोई राह नही रही।

لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾

49. इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता और अगर उसे बुराई पहुंच जाती है तो बहुतही मायूस, आसो उम्मीद तौड बैठने वाला हो जाता है।

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾

50. और अगर हम उसे अपनी जानिब से रह़मत (का मज़ा) चखा दें उस तक्लीफ़ के बाद जो उसे पहुंच चुकी थी तो वोह ज़रूर केहने लगता है कि येह तो मेरा ह़क़ था और मैं नहीं समझता कि क़ियामत बरपा होनेवाली है और अगर मैं अपने रबकी तरफ़ लौटाया भी जाऊं तो भी उसके हुज़ूर मेरे लिए यक़ीनन भलाई होगी सो हम ज़रूर कुफ़्र करनेवालों को उन कामों से आगाह कर देंगे जो उन्होंने अंजाम दिए और हम उन्हें ज़रूर सख़्त तरीन अ़ज़ाब (का मज़ा) चखा देंगे।

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾

51. और जब हम इन्सान पर इनआ़म फ़रमाते हैं तो वोह मुंह फेर लेता है और अपना पेहलू बचा कर हम से दूर हो जाता है और जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है तो लम्बी चौड़ी दुआ़ करनेवाला हो जाता है।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ
اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ
مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾

52. फ़रमा दीजिए : भला तुम बताओ अगर येह (कुरआन) अल्लाह ही की तरफ़ से (उतरा) हो फिर तुम उसका इन्कार करते रहो तो उस शख़्स से बढ़ कर गुमराह कौन होगा जो परले दर्जेकी मुख़ालिफ़त में (पड़ा) हो।

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَ فِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ
الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾

53. हम अ़नक़रीब उन्हें अपनी निशानियां अतराफ़े आ़लम में और खुद उनकी ज़ातों में दिखा देंगे यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि वोही हक़ है। क्या आपका रब (आपकी ह़क़्क़ानियत की तस्दीक़ के लिए) काफ़ी नहीं है कि वोही हर चीज़ पर गवाह (भी) है।

اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ
اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾ ع ٦

54. जान लो कि वोह लोग अपने रबके हुजूर पेशी की निस्बत शक में हैं, ख़बरदार ! वोही (अपने इ़ल्मो क़ुदरत से) हर चीज़ का अह़ाता फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 53	42 सूरतुश्शूरा मक्किय्यतुन 62	रुकूआतुहा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾ ج
عٓسٓقٓ ﴿٢﴾

1. ह़ा मीम ।
2. ऐ़न सीन क़ाफ़।
{ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)}

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾

3. इसी तरह़ आपकी तरफ़ और उन (रसूलों) की तरफ़ जो आप से पहले हुए हैं अल्लाह वह़ी भेजता रहा है जो ग़ालिब है बड़ी ह़िक्मतवाला है।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٤﴾

4. जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है उसीका है, और वोह बुलंद मर्तबत, बड़ा बा अ़ज़मत है।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ

5. करीब है आस्मानी कुर्रे अपने उपर की जानिब से फट

وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ
وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥
وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَ مَآ
اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦
وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا
عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ
حَوْلَهَا وَ تُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا
رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَ
فَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝٧
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّ لٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ
رَحْمَتِهٖ ؕ وَ الظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ
وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٨
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ
فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَ هُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۫
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٩ ع ١ ٩ ٢
وَ مَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ
فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۺ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝١٠

पडें और फरिश्ते अपने रबकी हम्द के साथ तस्बीह़ करते रेहते हैं और उन लोगों के लिए जो ज़मीन में हैं बख़्शिश तलब करते रेहते हैं । याद रखो, अल्लाह ही बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

6. और जिन लोगों ने अल्लाहको छोड़ कर बुतोंको दोस्तो कारसाज़ बना रखा है अल्लाह उन (के ह़ालात) पर खूब निगेहबान है और आप उन (काफ़िरों) के ज़िम्मेदार नही हैं।

7. और उसी तरह हमने आपकी तरफ़ अ़रबी ज़बान में क़ुरआन की वह़ी की ताकि आप मक्कावालों को और उन लोगों को जो इसके इर्द गिर्द रेहते हैं डर सुना सकें, और आप जमा' होने के उस दिन का ख़ौफ़ दिलाऐं जिसमें कोई शक नहीं है। (उस दिन) एक गिरोह जन्नत में होगा और दूसरा गिरोह दोज़ख़में होगा।

8. और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वोह जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल फ़रमाता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार।

9. क्या उन्होंने अल्लाहको छोड़ कर बुतों को अवलिया बना लिया है, पस अल्लाह ही वली है (उसी के दोस्त ही अवलिया हैं) और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वोही हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

10.और तुम जिस अम्र में इख़्तिलाफ़ करते हो तो उसका फ़ैसला अल्लाह ही की तरफ़ (से) होगा, येही अल्लाह मेरा रब है उसी पर में ने भरोसा किया और इसी की तरफ़ में रजूअ़ करता हूं।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّ مِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۱۱﴾

11. आस्मानों और ज़मीन को अदम से वजूद में लानेवाला है, उसीने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिनसों से जोड़े बनाए और चौपायों के भी जोड़े बनाए और तुम्हें इसी (जोडोंकी तदबीर) से फ़ैलाता है, उसके मानिन्द कोई चीज़ नहीं है और वही सुननेवाला देखनेवाला है।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾

12. वोही आस्मानों और ज़मीनकी कुंजियों का मालिक है (या'नी जिस के लिए वोह चाहे ख़ज़ाने खोल देता है) वोह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ो अता कुशादा फ़रमा देता है और (ज़िसके लिए चाहता है) तंग कर देता है। बेशक वोह हर चीज का खूब जानने वाला है।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ لَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾

13. उसने तुम्हारे लिए दीन का वोही रास्ता मुक़र्रर फ़रमाया जिसका हुक्म उसने नूह (عليه السلام) को दिया था और जिसकी वही हमने आपकी तरफ़ भेजी और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम और मूसा व ईसा (عليهم السلام) को दिया था (वोह येही है) कि तुम (इसी) दीन पर क़ाइम रहो और इस में तफ़रिक़ा न डालो, मुशरिकों पर बहुत ही गिरां है वोह (तौहीद की बात) जिसकी तरफ़ आप उन्हें बुला रहे हैं। अल्लाह जिसे (ख़ुद) चाहता है अपने हुज़ूर में (क़ुर्बे ख़ास के लिए) मुन्तखब फ़रमा लेता है और अपनी तरफ़ (आने की) राह दिखा देता है (हर) उस शख़्स को जो (अल्लाह की तरफ़) क़लबी रुजूअ करता है।

وَ مَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ

14. और उन्होंने फ़िरक़ा बंदी नहीं की थी मगर इसके बाद जबकि उनके पास इल्म आ चुका था महज़ आपसकी ज़िद (और हट धर्मी) की वजह से, और अगर आपकेरबकी जानिबसे मुकर्ररा मुद्दत तक (की मोहलत) का फ़रमान पहले सादिर न हुवा होता तो उनके दरमियान फ़ैसला किया जा चुका होता, और बेशक जो लोग उनके

الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١٤﴾

बाद किताब के वारिस बनाए गए थे वोह खुद उसकी निस्बत फरैब देनेवाले शक में (मुब्तिला) हैं।

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَ اسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾

15. पस आप उसी (दिन) के लिए दा'वत देते रहैं और जैसे आपको हुक्म दिया गया है (उसी पर) क़ायम रहिए और उनकी ख़्वाहिशात पर कान न धरिये, और (येह) फ़रमा दीजिए : जो किताब भी अल्लाह ने उतारी है मैं उस पर ईमान रखता हूं , और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान अ़द्लो इन्साफ़ करूं । अल्लाह हमारा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, हमारे लिए हमारे आ'माल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आ'माल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई बहसो तकरार नहीं, अल्लाह हम सबको जमा' फ़रमाएगा और उसी की तरफ़ (सबको) पलटना है।

وَ الَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ عَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾

16. और जो लोग अल्लाह (के दीन के बारे) में झगडते हैं बाद इसके के उसे क़ुबूल कर लिया गया उनकी बहसो तकरार उनके रब के नज़दीक बातिल है और उन पर (अल्लाह का) गज़ब़ है और उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَ مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾

17. अल्लाह वोही है जिसने ह़क़ के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई और (अ़दलो इन्साफ़का) तराज़ू (भी उतारा), और आपको किसने ख़बरदार किया, शायद क़ियामत क़रीब ही हो।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ

18. इस (कयामत) में वोह लोग जलदी मचाते हैं जो इस पर ईमान (ही) नहीं रखते और जो लोग ईमान रखते हैं उससे डरते हैं और जानते हैं कि इसका आना ह़क़ है, जान लो ! जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ा करते हैं वोह

لَفِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾

परले दर्जे की गुमराही में हैं।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ ع ٢ ١٠ ٣

19. अल्लाह अपने बंदों पर बड़ा लुत्फ़ो करम फ़रमानेवाला है, जिसे चाहता है रिज़्क़ो अ़ता से नवाज़ता है और वोह बड़ी क़ुव्वतवाला बडी इ़ज़्ज़तवाला है ।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾

20. जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहता है हम उसके लिए उसकी खेती में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमा देते हैं और जो शख़्स दुनिया की खेती का तालिब होता है (तो) हम उसको उसमें से कुछ अ़ता कर देते हैं फिर उसके लिए आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं रेहता।

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

21. क्या उनके लिए कुछ (ऐसे) शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए दीनका ऐसा रास्ता मुक़र्रर कर दिया हो, जिसका अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया था, और अगर फ़ैसले का फ़रमान (सादिर) न हुवा होता तो उनके दरमियान क़िस्सा चुका दिया जाता, और बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَاۗءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

22. आप ज़ालिमों को उन (आ'माल) से डरनेवाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखे हैं और वोह (अ़ज़ाब) उन पर वाके' हो कर रहेगा, और जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे वोह बहिश्त के चमनों में होंगे, उन के लिए उनके रबके पास वोह (तमाम ने'मतें) होंगी जिनकी वोह ख़्वाहिश करेंगे, येही तो बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۭ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ

23. येह वोह (इन्आ़म) है जिसकी ख़ुश ख़बरी अल्लाह ऐसे बंदों को सुनाता है जो ईमान लाएऔर नेक आ'माल करते रहे, फ़रमा दीजिए : में इस (तबलीगे रिसालत) पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता मगर (अपनी और अल्लाह की) करावतो क़ुर्बत से मुहब्बत (चाहता हूं) और जो

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾

शख़्स नेकी कमाएगा हम उसके लिए इस में उख़रवी सवाब और बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला कद्रदान है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى
قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَ
يُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾

24. क्या येह लोग केहते हैं के इस (रसूल ﷺ) ने अल्लाह पर झुटा बोहतान तराशा है, सो अगर अल्लाह चाहे तो आपके कल्बे अतहर पर (सब्रो इस्तिक़ामत की) मोहर सब्त फ़रमा दे (ताकि आपको इनकी बेहूदा गोई का रंज न पहुंचे), और अल्लाह बातिल को मिटा देता है और अपने कलिमात से हक़ को साबित रखता है। बेशक वोह सीनों की बातों को ख़ूब जाननेवाला है।

وَ هُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ
عِبَادِهٖ وَ يَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَ
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. और वोही है जो अपने बंदोंकी तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और लगजिशों से दरगुज़र फ़रमाता है और जो कुछ तुम करते हो (उसे) जानता है।

وَ يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ
وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾

26. और उन लोगों की दुआ क़ुबूल फ़रमाता है जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे और अपने फ़ज़्ल से उन्हें (उनकी दुआ से भी) ज़ियादह देता है, और जो काफ़िर हैं उन के लिए सख़्त अज़ाब है।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا
فِي الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ
مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ
بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾

27. और अगर अल्लाह अपने तमाम बंदों के लिए रोजी कुशादा फ़रमा दे तो वोह ज़रूर ज़मीनमें सरकशी करने लगें लेकिन वोह (ज़रूरियात के) अंदाज़े के साथ जितनी चाहता है उतारता है, बेशक वोह अपने बंदों (की ज़रूरतों) से ख़बरदार है ख़ूब देखनेवाला है।

وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ
مَا قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَ هُوَ
الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾

28. और वोही है जो बारिश बरसाता है उनके मायूस हो जाने के बाद और अपनी रहमत फैला देता है, और वोह कारसाज़ बड़ी ता'रीफ़ों के लाइक़ है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ
دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ
قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾ ع

29.और उसकी निशानियों में से आस्मानों और ज़मीनकी पैदाइश है और उन चलनेवाले (जानदारों) का (पैदा करना) भी जो उसने उनमें फैला दिए हैं, और वोह उन (सब) के जमा' करने पर भी जब चाहेगा बड़ा क़ादिर है।

وَ مَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا
كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ يَعْفُوْا عَنْ
كَثِيْرٍ ﴿۳۰﴾ ؕ

30. और जो मुसीबत भी तुम को पहुंचती है तो उस (बद आ'माली) के सबब से ही (पहुंचती है) जो तुम्हारे हाथोंने कमाई होती है ह़ालांकि बहुतसी (कोताहियों) से तो वोह दरगुज़र भी फ़रमा देता है।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّ
لَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾

31. और तुम (अपनी तदबीरों से) अल्लाह को (पूरी) ज़मीनमें आ़जिज़ नहीं कर सक्ते और अल्लाह को छोड़ कर (बुतों में से) न कोई तुम्हारा हामी होगा और न मददगार।

وَ مِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ
كَالْاَعْلَامِ ﴿۳۲﴾ ؕ

32. और उसकी निशानियों में से पहाड़ों की तरह ऊंचे बह्री जहाज़ भी हैं।

اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ
رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۳﴾

33. अगर वोह चाहे हवाको बिलकुल साकिन कर दे तो कश्तियां सत्हे समन्दर पर रुकी रेह जाएं , बेशक उस में हर सब्र शिआ़रो शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं।

اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَ يَعْفُ
عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۴﴾

34. या उन (जहाजों और कश्तियों) को उनके आ'माले (बद) के बाइ़स जो उन्होंने कमा रखे हैं ग़र्क़ कर दे, मगर वोह बहुत(सी खताओं) को मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

وَّ يَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ
اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿۳۵﴾

35. और हमारी आयतों में झगड़ा करनेवाले जान लें कि उन के लिए भाग निकलने की कोई राह नहीं है।

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ فَمَتَاعُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ

36. सो तुम्हें जो कुछ भी (मालो मताअ़) दिया गया है वोह दुन्यवी ज़िन्दगी का (चंद रोज़ा) फ़ाइदा है और जो

وَّ اَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾

कुछ अल्लाह केपास है वोह बेहतर और पाएदार है (येह) उन लोगों के लिए है जो ईमान लाते और अपने रब पर तवक्कल करते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. और जो लोग कबीरा गुनाहों और बेहयाई के कामों से परहेज़ करते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो मुआफ़ कर देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۪ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. और जो लोग अपने रबका फ़रमान क़ुबूल करते हैं और नमाज़ काइम रखते हैं और उनका फैसला बाहमी मश्वरे से होता है और उस माल में से जो हमने उन्हें अता किया है ख़र्च करते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. और वोह लोग कि जब उन्हें (किसी ज़ालिमो जाबिर) से ज़ुल्म पहुंचता है तो (उससे) बदला लेते हैं।

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

40. और बुराई का बदला इसी बुराई की मिस्ल होता है, फिर जिसने मुआफ़ कर दिया और (मुआफ़ी के ज़रीए) इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाहके ज़िम्मे है। बेशक वोह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾

41. और यक़ीनन जो शख़्स अपने ऊपर ज़ुल्म होनेके बाद बदला ले तो ऐसे लोगों पर (मलामतो गिरफ़्त) की कोई राह नहीं है।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾

42. बस (मलामतो गिरफ़्त की) राह सिर्फ़ उनके खिलाफ है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक्क सरकशीओ फसाद फैलाते हैं, ऐसे ही लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع ٤ ١٤ ٥

43. और यक़ीनन जो शख़्स सब्र करे और माफ कर दे तो बेशक येह बुलंद हिम्मत कामों में से है।

وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ
مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا
رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى
مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۴﴾

44. और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसके लिए उसके बाद कोई कारसाज़ नहीं होता, और आप जालिमों को देखेंगे के जब वोह अ़ज़ाबे (आख़िरत) देख लेंगे (तो) कहेंगे : क्या (दुनिया में) पलट जानेकी कोई सबील है।

وَ تَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ
مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ
خَفِيٍّ ؕ وَ قَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ
الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
وَ اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾

45. और आप उन्हें देखेंगे कि वोह दोज़ख़ पर ज़िल्लत और ख़ौफ़ के साथ सर झुकाए हुए पेश किऐ जाएंगे (उसे चोरी चोरी) छुपी निगाहों में से देखते होंगे, और ईमानवाले कहेंगे : बेशक नुक्सान उठानेवाले वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को और अपने एहलो अ़याल को क़ियामत के दिन ख़सारे में डाल दिया, याद रखो ! बेशक ज़ालिम लोग दाईमी अ़ज़ाब में (मुब्तिला) रहेंगे।

وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ
يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ
يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۶﴾

46. और उन (काफ़िरों) के लिए कोई हिमायती नहीं होंगे जो अल्लाह के मुक़ाबिल उनकी मदद कर सकें, और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा देता है तो उसके लिए (हिदायत की) कोई राह नहीं रेहती।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا
لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّ مَا لَكُمْ مِّنْ
نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾

47. तुम लोग अपने रबका हुक्म क़ुबूल करलो क़ब्ल इसके कि वोह दिन आजाऐ जो अल्लाह की तरफ़ से टलने वाला नहीं है, न तुम्हारे लिए उस दिन कोई जाऐ पनाह होगी और न तुम्हारे लिए कोई जाए इन्कार।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ
حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ
اِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
فَرِحَ بِهَا ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا

48. फिर (भी) अगर वोह रूगर्दानी करें तो हमने आपको उन पर (तबाही से बचाने का) ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा । आप पर तो सिर्फ़ (पैग़ामे ह़क़्क़) पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है, और बेशक जब हम इन्सान को अपनी बारगाह से रहमत (का ज़ाइक़ा) चखाते हैं तो वोह उससे खुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई मुसीबत पहोंचती है

قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾

उनके अपने हाथों से आगे भेजे हुऐ आ'माले (बद) के बाइस तो बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रगुज़ार (साबित होता) है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ۙ

49. अल्लाह ही के लिए आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत है, वोह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है, जिसे चाहता है लड़कियां अता करता है और जिसे चाहता है लड़के बख़्शाता है।

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

50. या उन्हें बेटे और बेटियां (दोनों) जमा' फ़रमाता है और जिसे चाहता है बांझ ही बना देता है, बेशक वोह खूब जाननेवाला बड़ी कुदरत वाला है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾

51. और हर बशर की (येह) मजाल नहीं कि अल्लाह उससे (बराहे रास्त) कलाम करे मगर येह कि वह्री के जरीए (किसी को शाने नुबुव्वत से सरफ़राज फ़रमा दे) या पर्दे के पीछे से (बात करे जैसे मूसा عليه السلام से तूरे सीना पर की) या किसी फ़रिश्ते को फ़िरस्तादह बना कर भेजे और वोह उसके इज़्न से जो अल्लाह चाहे वह्री करे (अल ग़रज आ़लमे बशरियत के लिए खिताबे इलाही का वास्ता और वसीला सिर्फ़ नबी और रसूल ही होगा), बेशक वोह बुलंद मर्तबा बड़ी हिक्मतवाला है।

وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَ لَا الْاِيْمَانُ وَ لٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَ اِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى

52. सो इसी तरह हमने आपकी तरफ़ अपने हुक्म से रूहे (कुलूबो अरवाह) की वह्री फ़रमाई (जो कुरआन है), और आप (वह्री से क़ब्ल अपनी ज़ाती दिरायतो फ़िक्र से) न येह जानते थे कि किताब क्या है और न ईमान (के शरई अह्काम की तफ़्सीलात को ही जानते थे जो बाद में नाज़िल और मुक़र्रर हुईं) ★ मगर हमने उसे नूर बना दिया। हम उस (नूर) के जरीए अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं

★ (आप ﷺ की शाने उम्मियत की तरफ़ इशारा है ताकि कुफ़्फ़ार आपकी ज़बान से कुरआन की आयात और ईमान

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۙ ﴿٥٢﴾

हिदायत से नवाजते हैं, और बेशक आप ही सिराते मुस्तकीम की तरफ़ हिदायत अता फ़रमाते हैं।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ
اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾ ع ٥/١

53. (येह) सिराते मुस्तकीम) उसी अल्लाह ही का रास्ता है जो आस्मानों और ज़मीन की हर चीज का मालिक है। जान लो ! के सारे काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं।

आयातुहा 89	43 सूरतुज़.ज़ुखरुफ़ि मक्कियतुन 63	रुकूआतुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾

1. हा मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ ﴿٢﴾ ع ١١

2. क़सम है रौशन किताब की।

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۚ ﴿٣﴾

3. बेशक हमने इसे अ़रबी (ज़बान) का कुरआन बनाया है ताकि तुम लोग समझ सको।

وَاِنَّهٗ فِىْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِىٌّ
حَكِيْمٌ ؕ ﴿٤﴾

4. बेशक वोह हमारे पास सब किताबों की अस्ल (लौहे महफ़ूज़) में सब्त है यक़ीनन (येह सब किताबों पर) बुलंद मर्तबा बड़ी हिक्मतवाला है।

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾

5. और क्या हम इस नसीहत को तुम से इस बिना पर रोक दें कि तुम हद से गुज़र जानेवाली क़ौम हो।

की तफ़्सीलात सुनकर येह बदगुमानी न फैलाएं के येह सब कुछ हजरत मुहम्मद मुस्तुफा ﷺ ने अपने जाती इल्म और तफ़क्कुर से घड़ लिया है कुछ नाज़िल नहीं हुवा, सो येह अज़ ख़ुद न जानना हुज़ूर ﷺ का अ़ज़ीम मो'जिज़ा बना दिया गया।)

★(ऐ हबीब! आपका हिदायत देना और हमारा हिदायत देना दोनों की हक़ीक़त एक ही है और सिर्फ़ उन्ही को हिदायत नसीब होती है जो उस हक़ीक़त की मा'रेफत और उससे वाबस्तगी रखते हैं।)

وَ كَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي
الْاَوَّلِيْنَ ۝٦

6. और पहले लोगों में हमने कितने ही पयग़म्बर भेजे थे।

وَ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧

7. और कोई नबी उनके पास नहीं आता था मगर वोह उसका मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

فَاَهْلَكْنَاۤ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّ مَضٰى
مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨

8. और हमने इन (कुफ़्फ़ारे मक्का) से ज़ियादह ज़ोर आवर लोगों को हलाक कर दिया और अगले लोगों का हाल (कई जगह पहले) गुज़र चुका।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ
الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٩ۙ

9. और अगर आप उनसे पूछें कि आस्मानों और ज़मीनको किसने पैदा किया तो वोह यक़ीनन कहेंगे कि उन्हें गालिब, इल्मवाले (रब) ने पैदा किया है।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّ
جَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ۝١٠ۙ

10. जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछोना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम मंज़िले मक़्सूद तक पहुंच सको।

وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ
بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ
كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١١

11. और जिसने आस्मान से अंदाज़ए (ज़रूरत) के मुताबिक पानी उतारा, फिर हमने उससे मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह तुम (भी मरने के बाद ज़मीनसे) निकाले जाओगे।

وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَ
جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ
مَا تَرْكَبُوْنَ ۝١٢ۙ

12. और जिसने तमाम अक़्सामो अस्नाफ़ की मख़लूक़ पैदा की और तुम्हारे लिए कश्तियां और बहरी जहाज़ बनाए और चौपाए बनाए जिन पर तुम (बहरो बर्रमें) सवार होते हो।

لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا
نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ
وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا

13. ताकि तुम उनकी पुश्तों (या नशिस्तों) पर दुरुस्त हो कर बैठ सको, फिर तुम अपने रब की ने'मत को याद करो, जब तुम सुकून से उस (सवारीकी नशिस्त) पर बैठ जाओ तो कहो पाक है वोह ज़ात जिसने इसको हमारे ताबे

هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۙ ﴿١٣﴾

कर दिया हा़लांकि हम उसे का़बू में नहीं ला सक्ते थे।

وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और बेशक हम अपने रब की तरफ़ ज़रूर लौट कर जानेवाले हैं।

وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ۭ﴿١٥﴾

15. और उन (मुशरिकों) ने उसके बंदों में से (बा'ज़ को उसकी औलाद करार दे कर) उसके जुज़्व बना दिए, बेशक इन्सान सरीह़न बड़ा नाशुक्रगुज़ार है।

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّ اَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾

16. (ऐ काफ़िरो ! अपने पैमानए फिक्रके मुताबिक येही जवाब दो कि) क्या उसने अपनी मख़लूकात में से (खुद अपने लिए तो) बेटियां बना रखी हैं और तुम्हें बेटों के साथ मुख़्ास कर रखा है ?

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾

17. हा़लांके जब उनमें से किसी को उस (के घर में बेटी की पैदाइश) की ख़बर दी जाती है जिसे उन्होंने (खुदाऐ) रहमान को शबीह बना रखा है तो उसका चेहरा सियाह हो जाता है और ग़मो ग़ुस्से से भर जाता है।

اَوَ مَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾

18.और क्या (अल्लाह अपने उमूर में शराकतो मुआविनत के लिए उसे औलाद बनाएगा) जो ज़ेवरो ज़ीनत में परवरिश पाए और (नरमिए तबा' और शर्मो ह़याके बाइ़स) झगड़े में वाज़ेह़ (राए का इज़्हार करनेवाली भी) न हो।

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ۭ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ۭ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُوْنَ ﴿١٩﴾

19. और उन्होंने फ़रिश्तों को जो के(खुदाए) रह़मान के बंदे हैं औ़रतें क़रार दिया है, क्या वोह उनकी पैदाइश पर हा़ज़िर थे, (नहीं तो) अब उनकी गवाही लिख ली जाएगी और (रोजे़ कि़यामत) उनसे बाज़ पुर्स होगी।

وَقَالُوْا لَوْ شَاۗءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ۭ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۤ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۭ﴿٢٠﴾

20. और वोह केहते हैं कि अगर रह़्मान चाहता तो हम इन (बुतों) की परस्तिश न करते, उन्हें इसका (भी) कुछ इल्म नहीं है वोह मह़ज़ अटकल से झुटी बातें करते हैं।

أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾

21. क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दे रखी है जिसे वोह सनद के तौर पर थामे हुए हैं।

بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. (नहीं) बल्कि वोह केहते हैं बेशक हमने अपने बापदादा को एक मिल्लत (व मजहब) पर पाया और यक़ीनन हम उनही के नुकूशे क़दम पर (चलते हुऐ) हिदायत याफ़्ता हैं।

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. और इसी तरह हमने किसी बस्ती में आपसे पहले कोई डर सुनानेवाला नहीं भेजा मगर वहां के वडेरों और खुशहाल लोगों ने कहा : बेशक हमने अपने बापदादा को एक तरीक़ा-व-मजहब पर पाया और हम यक़ीनन उन ही के नुकूशे क़दम की इक्तिदा करनेवाले हैं।

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. (पयग़म्बर ने) कहा : अगरचे मैं तुम्हारे पास उस (तरीक़े) से बेहतर हिदायत का (दीन और) तरीका ले आऊं जिस पर तुमने अपने बापदादा को पाया था, तो उन्होंने कहा : जो कुछ (भी) तुम दे कर भेजे गऐ हो हम उनके मुन्किर हैं।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ ع ٢ ١٠ ٨ النصف

25. सो हमने उनसे बदला ले लिया पस आप देखिए के झुटलानेवालों का अंजाम कैसा हुवा।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ ۙ

26. और जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने हक़ीक़ी चचा मगर परवरिश की निस्बत से) बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया : बेशक मैं उन सब चीज़ों से बेज़ार हूं जिन्हें तुम पूजते हो।

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

27. बजुज़ उस ज़ात के जिसने मुझे पैदा किया सो वोही मुझे अ़नक़रीब रास्ता दिखाएगा।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. और इब्राहीम (عليه السلام) ने उस कलिमए तवहीद) को अपनी नस्लो ज़ुर्रिय्यत में बाक़ी रहनेवाला कलिमा बना दिया ताकि वोह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करते रहें।

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾

29. बल्कि मैंने उन्हें और उन के आबाओ अजदाद को (उसी इब्राहीम (عليه السلام) के तसद्दुक़ और वासिते से इस दुनिया में) फ़ाइदा पहुंचाया है यहां तक कि उन के पास ह़क़ (या'नी क़ुरआन) और वाज़ेह़-व-रौशन बयानवाला रसूल(ﷺ) तशरीफ़ ले आया।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और जब उनके पास ह़क़ आ पहुंचा तो केहने लगे : येह जादू है और हम इसके मुन्किर हैं।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾

31.और केहने लगे : येह क़ुरआन (मक्का और ताइफ़ की) दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी (या'नी किसी वडेरे, सरदार और मालदार) पर क्यों नहीं उतारा गया ?

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾

32.क्या आपके रब की रह़मते (नुबुव्वत) को येह लोग तक़्सीम करते हैं? हम उन के दरमियान दुन्यवी ज़िन्दगीमें उन के अस्बाबे (मईशत) तक़्सीम करते हैं और हम ही उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ पर (वसाइलो दौलत में) दरजात की फ़ौक़िय्यत देते हैं (क्या हम येह इस लिए करते हैं) कि उन में बा'ज़ (जो अमीर हैं) बा'ज़ ग़रीबों) का मज़ाक उड़ाएं (येह गुर्बत का तमस्ख़ुर है कि तुम इस वजह से किसी को रह़्मते नुबुव्वत का हक़दार ही न समझो) और आप केरब की रह़्मत उस दौलत से बेहतर हैं जिसे वोह जमा' करते हैं और घमंड करते हैं।

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. और अगर येह न होता कि सब लोग (कुफ़्र पर जमा' हो कर) एक ही मिल्लत बन जाएंगे तो हम (ख़ुदाए) रह़्मान के साथ कुफ़्र करनेवाले तमाम लोगों के घरों की छतें (भी) चांदी की कर देते और सीढ़ियां (भी) जिन पर वोह चढ़ते हैं।

وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا

34. और (इसी तरह़) उन के घरों के दरवाज़े (भी

يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾

चांदी की के कर देते) और तख़्त (भी) जिन पर वोह मस्नद लगाते हैं।

وَ زُخْرُفًا ؕ وَ اِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾ ع ٣ ١٠ ٩

35. और चांदी के ऊपर सोने और जवाहिरात की आराइश भी (कर देते), और येह सब कुछ दुन्यवी ज़िन्दगी की आ़रज़ी और ह़क़ीर मताअ़ है, और आख़िरत (का हुस्नो ज़ेबाइश) आपके रब के पास है (जो) सिर्फ़ परहेज़गारों के लिए है।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

36. और जो शख़्स (ख़ुदाए) रह़मान की याद से सर्फ़े नज़र कर ले तो हम उसके लिए एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं जो हर वक़्त उसके साथ जुड़ा रेहता है।

وَ اِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. और वोह (शयातीन) उन्हें (हिदायत के) रास्ते से रोकते हैं और वोह येही गुमान किए रेहते हैं के वोह हिदायत याफ़्ता हैं।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾

38. यहां तक कि जब वोह हमारे पास आएगा तो (अपने साथी शैतान से) कहेगा : ऐ काश ! मेरे और तेरे दरम्यान मशरिक़ो मग़रिब का फ़ासला होता पस (तू) बहुत ही बुरा साथी था।

وَ لَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. और आज के दिन तुम्हें (येह आरज़ू करना) सूदमंद नहीं होगा जबकि तुम (उम्र भर) ज़ुल्म करते रहे (आज) तुम सब अ़ज़ाब में शरीक हो।

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾

40. फिर क्या आप बेहरों को सुनाएंगे या अँधों को और उन लोगों को जो खुली गुमराही में हैं राहे हिदायत दिखाएंगे।

فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

41. पस अगर हम आपको (दुनिया से) ले जाएं तो तब भी हम इनसे बदला लेने वाले हैं।

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِىْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا

42. या हम आपको वोह (अ़ज़ाब ही) दिखा दें जिसका

عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾

हमने उनसे वा'दा किया है, सो बेशक हम उन पर कामिल क़ुदरत रखनेवाले हैं।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾

43. पस आप इस (क़ुर्आन) को मजबूती से थामे रखिए जो आपकी तरफ वह़ी किया गया है, बेशक आप सीधी राह पर (क़ाइम) हैं।

وَ اِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَ لِقَوْمِكَ ۚ وَ سَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾

44. और यक़ीनन येह (क़ुर्आन) आपके लिए और आपकी उम्मत के लिए अ़ज़ीम शरफ़ है, और (लोगो !) अ़नक़रीब तुम से पूछा जाएगा (कि तुमने क़ुरआ़न के साथ कितना तअ़ल्लुक़ उस्तुवार किया)।

وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ ع ۴ ۱۰

45. और जो रसूल हमने आपसे पहले भेजे आप उनसे पूछिये कि क्या हमने (ख़ुदाए) रह़मान के सिवा कोई और मा'बूद बनाए थे कि उनकी परस्तिश की जाए।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. और यक़ीनन हमने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियां दे कर फिरऔ़न और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो उन्होंने कहा : बेशक मैं सब जहानों के परवरदिगार का रसूल हूं।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. फिर जब वोह हमारी निशानियां ले कर उनके पास आए तो वोह उसी वक़्त उन (निशानियों) पर हंसने लगे।

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۫ وَ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और हम उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाते थे मगर (येह कि) वोह अपने से पहली मुशाबह निशानी से कहीं बढ़ कर होती थी और (बिल आख़िर) हमने उन्हें (कई बार) अ़ज़ाब में पकड़ा ताकि वोह बाज़ आ जाएं।

وَ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. और केहने लगे : ऐ जादूगर ! तू अपने रब से हमारे लिए उस अ़हद के मुताबिक दुआ़ कर जो उसने तुझ से कर रखा है (तो) बेशक हम हिदायत याफ़्ता हो जाएंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾

50. फिर जब हमने (दुआए मूसा से) वोह अ़ज़ाब उन से हटा दिया तो वोह फ़ौरन अ़हद शिकनी करने लगे।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَٰرُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

51. और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में (फ़ख़्र से) पुकारा (और) कहा : ऐ मेरी क़ौम ! क्या मुल्केमिस्र मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और येह नेहरें जो मेरे (मह़ल्लात के) नीचे से बेह रही हैं (क्या मेरी नहीं हैं?) सो क्या तुम देखते नहीं हो?

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾

52. क्या (येह ह़क़ीक़त नहीं कि) मैं इस शख़्स से बेहतर हूं जो ह़क़ीरो बे वक़्अ़त है और साफ़ तरीक़े से गुफ्तुगू भी नहीं कर सक्ता।

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

53. फिर (अगर येह सच्चा रसूल है तो) इस पर (पहनने के लिए) सोने के कंगन क्यों नहीं उतारे जाते या इसके साथ फ़रिश्ते जमा हो कर (पै दर पै) क्यों नहीं आ जाते।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿٥٤﴾

54. पस उसने (इन बातों से) अपनी क़ौम को बेवक़ूफ़ बना लिया, सो उन लोगोंने उसका केहना मान लिया, बेशक वोह लोग ही ना फ़रमान क़ौम थे।

فَلَمَّا آسَفُونَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾

55. फिर जब उन्होंने (मूसा عليه السلام की शान में गुस्ताख़ी कर के) हमें शदीद ग़ज़बनाक कर दिया (तो) हमने उनसे बदला ले लिया और हमने उन सब को ग़र्क़ कर दिया।

فَجَعَلْنَٰهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾

56. सो हमने उन्हें गया गुज़रा कर दिया और पीछे आनेवालों के लिए नमूनए इ़ब्रत बना दिया।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

57. और जब (ईसा) इब्ने मरयम (عليه السلام) की मिसाल बयान की जाए तो उस वक़्त आपकी क़ौम (के लोग) उस से (खुशी के मारे) हंसते हैं।

وَ قَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾

58. और केहते हैं आया हमारे मा'बूद बेहतर हैं या वोह (ईसा ﷺ), वोह आपसे येह बात महज़ झगड़ने के लिए करते हैं, बल्कि वोह लोग बड़े झगड़ालू हैं।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَ جَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۵۹﴾ ؕ

59. वोह (ईसा ﷺ) महज़ एक (बरगुज़ीदा) बंदा थे जिन पर हमने इनआ़म फ़रमाया और हमने उन्हें बनी इसराईल के लिए (अपनी कुदरत का) नमूना बनाया था।

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِى الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿۶۰﴾

60. और अगर हम चाहते तो हम तुम्हारे बदले ज़मीन में फ़रिश्ते पैदा कर देते जो तुम्हारे जा नशीन होते।

وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۱﴾

61. और बेशक वोह (ईसा ﷺ जब आस्मान से नुज़ूल करेंगे तो क़ुर्बे) क़ियामत की अ़लामत होंगे, पस तुम हरगिज़ उसमें शक न करना और मेरी पैरवी करते रहना, येह सीधा रास्ता है।

وَ لَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۶۲﴾

62. और शैतान तुम्हें हरगिज़ (इस राह से) रोकने न पाऐ बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَ لَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَ لِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿۶۳﴾

63. और जब ईसा (ﷺ) वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए तो उन्होंने कहा : यक़ीनन मैं तुम्हारे पास हिक्मतो दानाई ले कर आया हूं और (इस लिए आया हूं) कि बा'ज़ बातें जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो तुम्हारे लिए खूब वाज़ेह़ कर दूं, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىْ وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۴﴾

64. बेशक अल्लाह ही मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, पस उसी की इबादत करो। येही सीधा रास्ता है।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ

65. पस उनके दरम्यान (आपस में ही) मुख़्तलिफ़ फ़िरके हो गए, सो जिन लोगोंने जुल्म किया उन के लिए दर्दनाक

दिन के अ़ज़ाब की ख़राबी है ।

يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾

66. येह लोग क्या इन्तिज़ार कर रहे हैं (बस येही) के क़ियामत उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर भी न हो।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾

67. सारे दोस्तो अह़बाब उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे सिवाए परहेज़गारों के (उन ही की दोस्ती और विलायत काम आएगी)।

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾ ع ٦ ١١ ١٢

68. (उनसे फ़रमाया जाएगा) : ऐ मेरे (मुक़र्रब) बंदो ! आजके दिन तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न ही तुम ग़मज़दा होगे।

يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾

69. (येह) वोह लोग हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और हमेशा (हमारे) ताबेए फ़रमान रहे।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

70. तुम और तुम्हारे साथ जुड़े रेहनेवाले साथी ★ (सब) जन्नत में दाख़िल हो जाओ (जन्नतकी ने'मतों, राहतों और लिज़्ज़तों के साथ) तुम्हारी तकरीम की जाएगी।

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾

71. उन पर सोने की पलेटों और ग्लासों का दौर चलाया जाएगा और वहां वोह सब चीज़ें (मौजूद) होंगी जिनको दिल चाहेंगे और (जिनसे) आँखें राहत पाएंगी और तुम वहां हमेशा रहोगे।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾

72. और (ऐ परहेज़गारो !) येह वोह जन्नत है जिसके तुम

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا

(मुफ़स्सिरीने किरामने आयते करीमा में ''अज़वाजुकुम'' का मा'ना बीवियों केअ़लावा ''क़रीबी साथी'' भी किया है जैसे इमाम क़ुर्तुबी ने तफ़्सीरुल जामेउ़ल अह़कामुल क़ुरआन, (जुज़ 14 : 11) में, इमाम इब्ने कसीरने तफ्सीरुल क़ुरआनुल अ़ज़ीम, 4 :134 में और अल्लामा शौकानी ने तफ़्सीर फ़त्हुल क़दीर, 4 : 563 में बयान किया है इस बिना पर अज़वाज का मा'ना बीवियों की बजाए ''साथ जुड़े रेहनेवाले साथी'' किया है।)

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾

मालिक बना दिए गए हो, उन (आ'माल) के सिलेमें जो तुम अंजाम देते थे।

لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. तुम्हारे लिए उसमें बकसरत फल और मेवे हैं तुम उनमें से खाते रहोगे।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾ ۚ

74. बेशक मुजरिम लोग दोज़ख़के अ़ज़ाबमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾ ۚ

75. जो उनसे हलका नहीं किया जाएगा और वोह उसमें ना उम्मीद हो कर पड़े रहेंगे।

وَ مَا ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾

76. और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वोह खुद ही जुल्म करनेवाले थे।

وَ نَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾

77.और वोह (दारोग़ए जहन्नम को) पुकारेंगे ऐ मालिक ! आपका रब हमें मौत दे दे (तो अच्छा है)। वोह कहेगा कि (तुम अब इसी ह़ाल में ही) हमेशा रेहनेवाले हो।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾

78. बेशक हम तुम्हारे पास ह़क़ लाए लेकिन तुम में से अक्सर लोग ह़क़ को नापसंद करते थे।

اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ ۚ

79. क्या उन्होंने (या'नी कुफ़्फ़ारे मक्काने रसूल ﷺ के ख़िलाफ़ कोई तदबीर) पुख़्ता कर ली है तो हम (भी) पुख़्ता फ़ैसला करनेवाले हैं।

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. क्या वोह गुमान करते हैं कि हम उनकी पोशीदा बातें और उनकी सरगोशियां नहीं सुनते, क्यों नहीं (ज़रूर सुनते हैं) और हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते भी उनकेपास लिख रहे होते हैं।

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾

81. फ़रमा दीजिए कि अगर (बफ़र्ज़े मुह़ाल) रह़मान के(हां) कोई लड़का होता (या औलाद होती) तो मैं सब से पहले (उसकी) इबादत करनेवाला होता।

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۸۲﴾

82. आस्मानों और ज़मीनका परवरदिगार, अर्श का मालिक पाक है उन बातों से जो येह बयान करते हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۸۳﴾

83. सो आप उन्हें छोड़ दीजिऐ, बेकार बह़सों में पडे रहें और लग़्व ख़ेल ख़ेलते रहैं ह़त्ता के अपने उस दिन को पालेंगे जिसका उनसे वा'दा किया जा रहा है।

وَ هُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ فِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۴﴾

84. और वोही ज़ात आस्मान में मा'बूद है और ज़मीन में (भी) मा'बूद है और वोह बड़ी ह़िक्मतवाला बड़े इ़ल्मवाला है।

وَ تَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ۚ وَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾

85. और वोह ज़ात बड़ी बा बरकत है जिस के लिए आस्मानों और ज़मीनकी बादशाहत है और (उनकी भी) जो कुछ उनके दरमियान है, और (वक़्ते) क़ियामत का इ़ल्म (भी) उसके पास है, और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَ لَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾

86. और जिन की येह (काफ़िर लोग) अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हैं वोह (तो) शफ़ाअ़त का (कोई) इख़्तियार नहीं रखते मगर (उनकेबर अ़क्स शफ़ाअत का इख़्तियार उनको ह़ासिल है) जिन्होंने ह़क़ की गवाही दी और वोह उसे (यक़ीन के साथ) जानते भी थे।

وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾

87. और अगर आप इनसे दर्याफ़्त फ़रमाऐं कि इन्हें किसने पैदा किया है तो ज़रूर कहेंगे अल्लाहने, फिर वोह कहां भटकते फिरते हैं।

وَ قِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾

88. और उस (हबीबे मुकर्रम ﷺ) के (यूं) केहने की क़सम के या रब ! बेशक येह ऐसे लोग हैं जो ईमान (ही) नहीं लाते।

وقف لازم

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَ قُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ

89. सो (मेरे मह़बूब !) आप उनसे चेहरा फेर लीजिए

ع ٢٢ ١٣

يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ ع

और (यूं) केह दीजिए : (बस हमारा) सलाम, फिर वोह जल्द ही (अपना ह़श्र) मा'लूम कर लेंगे।

आयातुहा 59	44 सूरतुद्दुख़ानि मक्किय्यतुन 64	रुकूआतुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

١٤ع

حٰمٓ ﴿١﴾

1. ह़ा मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾

2. इस रौशन किताब की कसम।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا
كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾

3. बेशक हमने इसे एक बा बरकत रातमें उतारा है बेशक हम डर सुनानेवाले हैं।

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾

4. उस (रात) में हर ह़िक्मतवाले काम का (जुदा जुदा) फ़ैसला कर दिया जाता है।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ﴿٥﴾

5. हमारी बारगाह केहुक्म से, बेशक हम ही भेजनेवाले हैं।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦﴾

6. (येह) आपके रब की जानिब से रह़मत है, बेशक वोह खूब सुननेवाला खूब जाननेवाला है।

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾ وقف لازم

7. आस्मानों और ज़मीनका और कुछ उनके दरमियान है (उसका) परवरदिगार है, बशर्ते कि तुम यक़ीन रखनेवाले हो।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ
وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾

8. उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोही ज़िन्दगी देता और मौत देता है (वोह) तुम्हारा (भी) रब है और तुम्हारे अगले आबाओ अज्दाद का (भी) रब है।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾

9. बल्कि वोह शक में पड़े खेल रहे हैं।

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ

10. सो आप उस दिन का इन्तिज़ार करें जब आस्मान

مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾

वाज़ेह़ धुवाँ ज़ाहिर कर देगा।

يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾

11. जो लोगोंको ढाँप लेगा (या'नी हर तरफ़ मुह़ीत हो जाएगा), येह दर्दनाक अ़ज़ाब है।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾

12. (उस वक्त कहेंगे :) ऐ हमारे रब ! तू हमसे (इस) अ़ज़ाबको दूर कर दे, बेशक हम ईमान लाते हैं।

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَ قَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾

13. अब उनका नसीह़त मानना कहां (मुफ़ीद) हो सक्ता है हालां कि उनकेपास वाज़ेह़ बयान फ़रमाने वाले रसूल आ चुके।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿١٤﴾

14. फिर उन्होंने उससे मुंह फेर लिया और (गुस्ताख़ी करते हुए) केहने लगे : (वोह) सिखाया हुवा दीवाना है।

وقف لازم

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿١٥﴾

15. बेशक हम थोड़ा सा अ़ज़ाब दूर किए देते हैं तुम यक़ीनन (वोही कुफ़्र) दोहराने लगोगे।

وقف لازم

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿١٦﴾

16. जिस दिन हम बड़ी सख़्त गिरफ़्त करेंगे तो (उस दिन) हम यक़ीनन इन्तिक़ाम ले ही लेंगे।

وَ لَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾

17. और दर ह़क़ीक़त हमने उनसे पहले क़ौमे फ़िरऔन की (भी) आज़माइश की थी और उनकेपास बुज़ुर्गीवाले रसूल (मूसा عليه السلام) आए थे।

اَنْ اَدُّوْۤا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾

18. (उन्होंने कहा था) कि तुम बंदगाने ख़ुदा (या'नी बनी इसराईल) को मेरे ह़वाले कर दो, बेशक मैं तुम्हारी क़ियादतो रहबरी के लिए अमानतदार रसूल हूं।

وَّ اَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْۤ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ۚ

19. और येह कि अल्लाह केमुक़ाबले में सरकशी न करो मैं तुम्हारे पास रौशन दलील ले कर आया हूं।

وَ اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ

20. और बेशक मैंने अपने रब और तुम्हारे रबकी पनाह

تَرْجُمُوْنِ ۝٢٠
ले ली है इससे कि तुम मुझे संगसार करो।

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝٢١
21. और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से कनारा कश हो जाओ।

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ
مُّجْرِمُوْنَ ۝٢٢ الثلاثة
22. फिर उन्होंने अपने रबसे दुआ़ की कि बेशक येह लोग मुजरिम क़ौम हैं।

فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝٢٣
23. (इर्शाद हुवा) फिर तुम मेरे बंदों को रातों रात ले कर चले जाओ बेशक तुम्हारा तआ़क़ुब किया जाएगा।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ
مُّغْرَقُوْنَ ۝٢٤
24. और (ख़ुद गुज़र जाने के बाद) दरिया को साकिन और खुला छोड़ देना, बेशक वोह ऐसा लश्कर है जिसे डुबो दिया जाएगा।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٢٥
25. वोह कितने ही बाग़ात और चश्मे छोड़ गए।

وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٢٦
26. और ज़राअ़तें और आ़लीशान इमारतें।

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۝٢٧
27. और ने'मतें (और राहतें) जिन में वोह ऐश किया करते थे।

كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝٢٨
28. उसी तरह हुवा, और हमने उन सबका दूसरे लोगोंको वारिस बना दिया।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ
وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۝٢٩ ع ١ ٢٩ ١٤
29. फिर न (तू) उन पर आस्मान और ज़मीन रोए और न ही उन्हें मोहलत दी गई।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ
الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۝٣٠
30. और वाक़िअ़तन हमने बनी इसराईल को ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब से नजात बख़्शी।

مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ
الْمُسْرِفِيْنَ ۝٣١
31. फ़िरऔ़न से, बेशक वोह बड़ा सरकश, ह़द से गुज़रनेवालों में से था।

وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى
32. और बेशक हमने उन (बनी इसराईल) को इल्म की

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾

बिना पर सारी दुनिया (की मुअस्सर तेहज़ीबों) पर चुन लिया था।

وَ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾

33. और हमने उन्हें वोह निशानियां अ़ता फ़रमाईं जिन में ज़ाहिरी ने'मत (और सरीह आज़माइश) थी।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾ۙ

34. बेशक वोह लोग केहते हैं।

اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَ مَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿٣٥﴾

35. कि हमारी पहली मौत के सिवा (बाद में) कुछ नहीं है और हम (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे।

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٦﴾

36. सो तुम हमारे बापदादा को (ज़िन्दा कर के) ले आओ, अगर तुम सच्चे हो।

اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. भला येह लोग बेहतर हैं या (बादशाहे यमन अस्अ़द अबू करीब) तुब्बा' (अल हुमैरी) की क़ौम और वोह लोग जो उन से पहले थे, हमने उन (सब) को हलाक कर डाला था, बेशक वोह लोग मुजरिम थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. और हमने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है उसे मह़ज़ खेलते हुऐ नहीं बनाया।

مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. हमने दोनों को ह़क़ के (मक़्सदो ह़िक्मत के) साथ पैदा किया है लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते।

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٠﴾ۙ

40. बेशक फ़ैसले का दिन, उन सब के लिए मुकर्रा वक्त है।

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ۙ

41. जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न ही उनकी मदद की जाएगी।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾ ع ۲ ۱۳ ۱۵

42. सिवाए उनके जिन पर अल्लाहने रह़मत फ़रमाई है (वोह एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे), बेशक वोह बड़ा ग़ालिब बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝٤٣

43. बेशक कांटेदार फलका दरख़्त।

طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝٤٤

44. बड़े ना फ़रमानों का खाना होगा।

كَالْمُهْلِ ۛ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝٤٥

45. पिघले हुऐ तांबे की तरह वोह पेटों में खौलेगा।

معانقة ١٣

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝٤٦

46. खौलते हुए पानी के जोश की मानिन्द।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝٤٧

47. (हुक्म होगा) उस को पकड़ लो और दोज़ख़ के वस्त तक उसे ज़ोर से घसीटते हुऐ ले जाओ।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝٤٨

48. फिर इसके सर पर खौलते हुए पानी का अ़ज़ाब डालो।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝٤٩

49. मज़ा चख ले हां तू ही (अपने गुमान और दा'वे में) बड़ा मुअ़ज़्ज़ज़ो मुकर्रम है।

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝٥٠

50. बेशक येह वोही (दोज़ख़) है जिस में तुम शक किया करते थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝٥١

51. बेशक परहेज़गार लोग अम्नवाले मुक़ाम में होंगे।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝٥٢

52. बाग़ात और चश्मों में।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝٥٣

53. बारीक और दबीज़ रेशम का लिबास पेहने होंगे, आमने सामने बैठे होंगे

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝٥٤

54. इसी तरह (ही) होगा, और हम उन्हें गोरी रंगतवाली कुशादा चश्म हूरों से बियाह देंगे।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝٥٥

55. वहां (बैठे) इत्मीनान से हर तरह के फल और मेवे तलब करते होंगे।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝٥٦

56. उस (जन्नत) में मौत का मज़ा नहीं चखेंगे सिवाए (इस) पहली मौत के(जो गुज़र चुकी होगी) और अल्लाह उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लेगा।

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾

57. येह आपके रबका फ़ज़्ल है (या'नी आपका रब आपके वसीले से ही अ़ता करेगा), येही बहुत बड़ी कामयाबी है।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. बस हमने आप ही की ज़बान में इस (क़ुर्आन) को आसान कर दिया है ताकि वोह नसीह़त हासिल करें।

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع ٣ ١٧ ١٦

59. सो आप (भी) इन्तिज़ार फ़रमाएं यक़ीनन वोह (भी) इन्तिज़ार कर रहे हैं (आप उनका हश्रो इन्तिक़ाम देखेंगे और वोह आपकी शान और आपके तसद्दुक़ से मोमिनों पर मेरा इनआ़म देखेंगे)।

आयातुहा 37 | 45 सूरतुल जासियति मक्किय्यतुन 65 | रुकूआ़तुहा 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ ج

1. ह़ा मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

2. (इस) किताबका उतारा जाना अल्लाह की जानिबसे है जो बड़ी इ़ज़्ज़तवाला बड़ी ह़िक्मतवाला है।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ ط

3. बेशक आस्मानों और ज़मीन में यक़ीनन मोमिनों के लिए निशानियां हैं।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ لا

4. और तुम्हारी (अपनी) पैदाइशमें और उन जानवरोंमें जिन्हें वोह फैलाता है, यक़ीनन रखनेवाले लोगों के लिए निशानियां हैं।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ

5. और रात दिन के आगे पीछे आने जाने में और (बसूरते बारिश) उस रिज़्क़में जिसे अल्लाह आस्मान से उतारता है, फिर उससे ज़मीन को उसकी मुर्दनी के बाद ज़िन्दा कर देता है और (उसी तरह़) हवाओं के रुख़ फैरनेमें, उन

تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٥

लोगों के लिए निशानियां हैं जो अ़क़्लो शऊ़र रख़्ते हैं।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

6. येह अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम आप पर पूरी सच्चाई के साथ तिलावत फ़रमाते हैं, फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद येह लोग किस बात पर ईमान लाएंगे।

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٧ۙ

7. हर बोहतान तराश्नेवाले कज़्ज़ाब (और) बडे सियाहकार के लिए हलाकत है।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨

8. जो अल्लाह की (उन) आयतों को सुनता है जो उस पर पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती हैं फिर (अपने कुफ़्र पर) इसरार करता है तकब्बुर करते हुए, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं, तो आप उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की बशारत दे दीं।

وَ اِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٩ؕ

9. और जब उसे हमारी (क़ुरआनी) आयात में से किसी चीज़का (भी) इ़ल्म हो जाता है तो उसे मज़ाक बना लेता है, ऐसे ही लोगों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّ لَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠ؕ

10. उनके (इस अ़र्सए ह़यात के) बाद दोज़ख़ है और जो (माले दुनिया) उन्होंने कमा रखा है उनके कुछ काम नहीं आएगा और न वोह बुत (ही काम आएंगे) जिन्हें अल्लाह के सिवा उन्होंने कारसाज़ बना रखा है, और उनके लिए बहोत सख़्त अ़ज़ाब है।

هٰذَا هُدًى ۚ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١١ ع

11. येह (क़ुरआन) हिदायत है, और जिन लोगोंने अपने रबकी आयात के साथ कुफ़्र किया उनके लिए सख़्त तरीन दर्दनाक अ़ज़ाब है।

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ

12. अल्लाह ही है जिसने समन्दर को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें जहाज़ और कश्तियां

الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾

चलें और ताके तुम (बहरी रास्तों से भी) उसका फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) तलाश कर सको, और इस लिए कि तुम शुक्रगुज़ार हो जाओ।

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾

13. और उसने तुम्हारे लिए जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सबको अपनी तरफ़ से (निज़ाम के तहत) मुसख़्ख़र कर दिया है, बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14. आप ईमानवालों से फ़रमा दीजिए कि वोह उन लोगों को नज़र अँदाज़ कर दें जो अल्लाह के दिनों की (आमदकी) उम्मीद और ख़ौफ़ नहीं रखते ताकि वोह उन लोगों को उन (के आ'माल) का पूरा बदला दे दे जो वोह कमाया करते थे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾

15. जिसने कोई नेक अ़मल किया सो अपनी ही जान के (नफ़े' के) लिए और जिसने बुराई की तो (उसका वबाल भी) उसी पर है फिर तुम सब अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

16. और बेशक हमने बनी इसराईल को किताब और हुकूमत और नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई, और उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया और हमने उन्हें (उनकेहम ज़माना) जहानों पर (या'नी उस दौरकी क़ौमों और तेहज़ीबों पर) फ़ज़ीलत बख़्शी।

وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾

17. और हमने उनको दीन (और नुबुव्वत) के वाज़ेह दलाइल और निशानियां दी हैं मगर उसके बाद उनकेपास (बे'सते मुहम्मदी ﷺ का) इल्म आ चुका उन्होंने (उससे) इख़्तिलाफ़ किया महज़ बाहमी हसदो अ़दावत के बाइस, बेशक आपका रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उस अम्र का फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ

18. फिर हमने आपको दीन के खुले रास्ते (शरीअ़त)

فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾

पर मामूर फ़रमा दिया, सो आप उसी राह पर चलते जाए और उन लोगों को ख़्वाहिशों को क़ुबूल न फ़रमाइए जिन्हें (आपकी और आपके दीन की अ़ज़मतो हक़्क़ानियत का) इल्म ही नहीं है।

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَ اللّٰهُ وَلِيُّ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

19. बेशक येह लोग अल्लाह की जानिब से (इस्लाम की राह में पेश आमदह मुश्किलात के वक्तमें वा'दों के बावजूद) हरगिज़ आपके काम नहीं आएंगे, और बेशक ज़ालिम लोग (दुनिया में) एक दूसरे के ही दोस्त और मददगार हुआ करते हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का दोस्त और मददगार है।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ
رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. येह (क़ुरआन) लोगों के लिए बसीरतो इ़ब्रत के दलाइल हैं और यक़ीन रखनेवालों के लिए हिदायत और रह़मत है।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ
اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَ
مَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ ع ٢ ١٠ ١٨

21. क्या वोह लोग जिन्होंने बुराइयां कमा रखी हैं येह गुमान करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की मानिन्द कर देंगे जो ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे (कि) उनकी ज़िन्दगी और उनकी मौत बराबर हो जाए। जो दा'वा (येह कुफ़्फ़ार) कर रहे हैं निहायत बुरा है।

وَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ
بِالْحَقِّ وَ لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا
كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. और अल्लाहने आस्मानों और ज़मीन को ह़क़ (पर मब्नी ह़िक्मत) के साथ पैदा फ़रमाया और उस लिए के हर जान को उसके आ'माल का बदला दिया जाए जो उसने कमाए हैं और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ
وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّ خَتَمَ عَلٰى
سَمْعِهٖ وَ قَلْبِهٖ وَ جَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ
غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ
اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को मा'बूद बना रखा है और अल्लाहने उसे इल्म के बावजूद गुमराह ठेहरा दिया है और उसके कान और उसके दिल पर मोहर लगा दी है और उसकी आँख पर परदा डाल दिया है, फिर उसे अल्लाह के बाद कौन हिदायत कर सक्ता है, सो क्या तुम नसीहत क़ुबूल नहीं करते।

وَ قَالُوْا مَا هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا نَمُوْتُ وَنَحْیَا وَ مَا یُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا یَظُنُّوْنَ ﴿۲۴﴾

24. और वोह केहते हैं हमारी दुन्यवी जिन्दगी केसिवा (और) कुछ नहीं है हम (बस) यहीं मरते और जीते हैं और हमें ज़माने के (हालातो वाक़िआत के) सिवा कोई हलाक नहीं करता (गोया खुदा और आखिरत का मुकम्मल इन्कार करते हैं) और उन्हें इस (हक़ीक़त) का कुछ भी इल्म नहीं है वोह सिर्फ़ ख़यालो गुमान से काम ले रहे हैं।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآىِٕنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۵﴾

25. और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो उसके सिवा उनकी कोई दलील नहीं होती कि हमारे बापदादा को (ज़िन्दा कर के) ले आओ, अगर तुम सच्चे हो।

قُلِ اللّٰهُ یُحْیِیْكُمْ ثُمَّ یُمِیْتُكُمْ ثُمَّ یَجْمَعُكُمْ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ ع ۳ ۵ ۱۹

26. फ़रमा दीजिए : अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दगी देता है और फिर वोही तुम्हें मौत देता है फिर तुम सब को क़ियामत के दिन की तरफ़ जमा' फ़रमाएगा जिस में कोई शक नहीं है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ یَوْمَىٕذٍ یَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۷﴾

27. और अल्लाह ही केलिए आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी तब (सब) अहले बातिल सख़्त ख़सारे में पड़ जाएंगे।

وَ تَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِیَةً ۛؕ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْیَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾

28. और आप देखेंगे (कुफ़्फ़ारो मुन्किरीन का) हर गिरोह घुटनों के बल गिरा हुआ बैठा होगा, हर फ़िर्क़े को उस (के आ'माल) की किताब की तरफ़ बुलाया जाएगा, आज तुम्हें उन आ'माल का बदला दिया जाएगा जो तुम किया करते थे।

هٰذَا كِتٰبُنَا یَنْطِقُ عَلَیْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۹﴾

29. येह हमारा नविश्ता है जो तुम्हारे बारे में सच सच बयान करेगा, बेशक हम वोह सब कुछ लिखवा (कर महफ़ूज कर) लिया करते थे जो तुम करते थे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۰﴾

30. पस जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे तो उनका रब उन्हें अपनी रह़मत में दाख़िल फ़रमा लेगा, येही तो वाज़ेह़ कामयाबी है।

وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۱﴾

31. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया (उनसे कहा जाएगा :) क्या मेरी आयतें तुम पर पढ़ पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं, पस तुमने तकब्बुर किया और तुम मुजरिम लोग थे।

وَ اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ السَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّ مَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿۳۲﴾

32. और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वा'दा सच्चा है और क़ियामत (के आने) में कोई शक नहीं है तो तुम केहते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत किया है, हम उसे वहमो गुमान से सिवा कुछ नहीं समझते और हम (उस पर) यक़ीन करनेवाले नहीं हैं।

وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۳﴾

33. और उनके लिए वोह सब बुराइयां ज़ाहिर हो जाएंगी जो वोह अंजाम देते थे और वोह (अ़ज़ाब) उन्हें घेर लेगा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

وَ قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۴﴾

34. और (उनसे) कहा जाएगा : आज हम तुम्हें भुलाए देते हैं जिस तरह तुमने अपने उस दिन की पेशी को भुला दिया था और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और तुम्हारे लिए कोई भी मददगार न होगा।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَ لَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. येह इस वजह से (है) कि तुमने अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ बना रखा था और दुन्यवी ज़िन्दगी ने तुम्हें धोके में डाल दिया था, सो आज न तो वोह उस (दोज़ख़) से निकाले जाएंगे और न उनसे तौबा के ज़रीए (अल्लाह की) रज़ा जूई क़ुबूल की जाएगी।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ

36. पस अल्लाह ही के लिए सारी तारीफ़ें हैं जो आस्मानों

رَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

का रब है और ज़मीन का मालिक है, सब जहानों का परवरदिगार (भी) है।

وَ لَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾ ع ۴ ۱۱ ۲۰

37. और आस्मानों और ज़मीन में सारी किब्रियाई (या'नी बड़ाई) उसी केलिए है और वोही बड़ा ग़ालिब बड़ी हिक्मतवाला है।